रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली की दुनिया

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरूष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सॉझी शक्ति द्वारा हिलाएं न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में ऊँची उड़ान असम्भव है।"

वर्ष –2 अंक 13 मार्च 2008 मूल्यः 5 रू.

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस विशेषांक

'महिलाओं और लड़कियों में निवेश'

"बरली की दुनिया" हर माह नई–नई जानकारियां, सूचनाएं, कार्यक्रम, योजनाएं और संदेशों के साथ समाचार आप तक पहुँचाती है। इस बार "अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस" के अवसर पर "महिलाओं और लड़कियों में निवेश" विषय से जुड़ी जानकारियों के साथ मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश अनुसूचित जनजाति आयोग के सदस्य, मध्यप्रदेश मानव अधिकार आयोग के अध्यक्ष एवं इन्दौर जिले के कलेक्टर से प्राप्त हुए संदेश भी आपके लिए ला रही है। आशा है यह अंक आपको अच्छा लगेगा। हमें विश्वास है कि आप इसे पढ़ेंगे और आसपास के लोगों को भी जानकारियाँ देंगे।

शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश शासन
भोपाल–462 004

04 मार्च, 2008

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की मासिक पत्रिका **"बरली की दुनिया"** का अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस विशेषांक, मार्च माह में प्रकाशित किया जा रहा है।

बरली संस्थान के आदिवासी और ग्रामीण महिलाओं के कल्याण संबंधी कार्यो की मुझे जानकारी है। बरली की दुनिया पत्रिका भी नवसाक्षर महिलाओं की साक्षरता में वृद्धि का एक अच्छा प्रयास है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का "अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस विशेषांक" भी संस्थान से जुड़ी और प्रशिक्षित होने वाली माताओं, बहनों के लिए उपयोगी होगा।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

(शिवराजसिंह चौहान)

म.प्र. राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग

राजीव गांधी भवन, बेसमेन्ट, 35, श्यामला हिल्स,
भोपाल – 462002 (म.प्र.)

कार्या. : 2661439
फोन : निवास : 2424118
फैक्स : 0755–2661439

दिनांक 14/2/08

यशवंत सिंह दरबार
सदस्य

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मासिक पत्रिका **"बरली की दुनिया"** आदिवासी महिलाओं को प्रशिक्षित कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का कार्य कर रही है। जिससे उनके अनुभवों एवं प्रशिक्षण पर केंद्रित मासिक पत्रिका का प्रकाशन सराहनीय प्रयास है। नेतृत्व की संभावनाओं से भरे हुए अनुसूचित जनजाति की महिलाओं को प्रशिक्षित कर उनमें रोजगार की संभावनाओं को उत्कृष्ट करने का कार्य प्रशंसनीय है। आशा है पुस्तिका के प्रकाशन से प्रशिक्षित सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रकाशित अनुभव तथा जानकारी से प्रेरणा मिलेगी। मासिक पत्रिका के प्रकाशन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

(यशवंत सिंह दरबार)

न्यायमूर्ति देवदत्त माधव धर्माधिकारी
अध्यक्ष
मध्यप्रदेश मानव अधिकार आयोग, भोपाल

कार्यालय : पर्यावास भवन,
खण्ड–1, अरेरा हिल्स, जेलरोड, भोपाल–462 011
फोन : (0755) 2764505 फैक्स : (0755) 2574028
निवास : 6, श्यामला हिल्स, भोपाल – 462 002 (म.प्र.)
फोन : (0755) 2661820

भोपाल, दिनांक 18 फरवरी, 2008

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इंदौर द्वारा मासिक पत्रिका **"बरली की दुनिया"** का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। महिलाएँ, भारतीय समाज व्यवस्था की महत्वपूर्ण धुरी हैं। महिला साक्षरता से न केवल पूरा समाज साक्षर होता है बल्कि महिलाओं का सशक्तिकरण भी होता है। बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा महिलाओं की साक्षरता और उनके आर्थिक रूप से स्वावलम्बन के लिए जो प्रयास किए जा रहे हैं, वे अनुकरणीय हैं। इस संस्थान के क्रिया–कलापों से प्रेरणा लेकर अन्य समाज सेवी संगठनों को भी ऐसे कार्यों में अपना हाथ बँटाना चाहिए। बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान के पुनीत कार्यों की सार्थकता एवं पत्रिका के उद्देश्यपूर्ण प्रकाशन के लिए अनंत शुभकामनाएँ।

भवदीय

(जस्टिस डी. एम. धर्माधिकारी)

विवेक अग्रवाल
आई. ए. एस.

कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी
जिला इंदौर–452004, म.प्र.

अर्द्धशासकीय क्रमांक : क्यू/पीए/08
दिनांक 13 –02– 08

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इंदौर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है विशेषांक में प्रकाशित सामग्री नवसाक्षरों के लिए उपयोगी एवं मार्गदर्शी सिद्ध होगी। मैं विशेषांक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

(विवेक अग्रवाल)

'महिलाओं और लड़कियों में निवेश'

महिलाओं और लड़कियों में निवेश का महत्व

इस साल का 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' का मुख्य संदेश, 'महिलाओं और लड़कियों में निवेश करना' है। 'निवेश' शब्द का मतलब है आगे चलकर ज्यादा फायदा लेने के लिए अपनी पूँजी, अपना समय और पूरी ताकत लगा देना है। बढ़िया आम की फसल लेने के लिए बढ़िया बीज का रोप तैयार करते हैं। उसकी बढ़िया देखभाल करने में समय, मेहनत और खर्चा करना पड़ता है। इसी तरह से अच्छी नस्ल की मुर्गी के लिए अच्छी नस्ल की मुर्गी खरीदकर उससे मुर्गीपालन करते हैं। अच्छा दाना–पानी देते हैं, उसकी साफ–सफाई का ध्यान रखते हैं उनका बीमारियों से बचाव करते हैं। इसी तरह से लोग मछली पालन, बकरी पालन, जमीन, दुकान, मशीन आदि में पूँजी लगाते है ताकि आगे चलकर उनकी पूँजी दुगनी, चौगुनी, दसगुनी हो इस तरह की आशा करते हैं। सोचिए कि अगर जानवरों में फायदे की आशा से पूँजी लगाते है। तो इंसान अच्छे बने, उनको खाने को मिले, स्वास्थ्य अच्छा रहे, वे खुश रहें, मिलजुलकर रहें, प्रेम और एकता से रहें, इसमें पूँजी लगाना कितना जरूरी है। स्वस्थ और खुश समाज बनाने के लिए सबसे सीधा, सरल और फायदे का रास्ता है महिलाओं और लड़कियों में पूँजी लगाना। पूरी दुनिया यह बात मानती है कि अगर महिलाएं आगे बढ़ेंगी तो सभी आगे बढ़ेंगे। आज की लड़कियां वो रोप हैं जो आगे चलकर फलदार व छायादार पेड़ की तरह नेक व बढ़िया इंसान की माँ बनती है।

हमारे ही देश में जब भी कोई किसान, कलाकार, नेता, सामाजिक कार्यकर्ता, वैज्ञानिक, अवतार पुरूष, सिपाही, खिलाड़ी, एक अच्छा अमीर व्यक्ति जिसने देश का नाम किया है, उससे जब भी पूछा गया कि यह प्रेरणा कहाँ से मिली तो सबसे पहला उत्तर होता है 'माँ' से।

हमारे देश में 'सीताराम', 'राधेश्याम', 'गौरीपुत्र', 'यशोदा के लाल', इनमें महिला का नाम इसलिए पहले लिया जाता है क्योंकि इन महिलाओं का जीवन महान था और उनके कारण उन पुरूषों का दुनिया में नाम हुआ। लेकिन जब हम आज की हालत को देखते हैं कि महिलाओं को बहुत पीछे रखा जा रहा है जिससे समाज आगे बढ़ने की बजाय पीछे जा रहा है। अभी भी बड़ी संख्या में लड़कियों को स्कूल नहीं भेजा जा रहा, जन्म से पहले ही लोग उन्हें मार देते हैं, उनके जन्म पर बहुत बड़ा बोझ गिर जाता है, छोटी बच्चियों के खान–पान, उनके लाड़–प्यार, खेलकूद, खुशी पर बहुत कम लोग ध्यान देते है। जब वह बड़ी होती है वो वह अपने लिए सोच नहीं सकती कि जीवन में क्या बनेगी, कैसे आदमी से शादी करेगी, उसके बच्चे क्या बनेंगे, इसका निर्णय उनके आसपास के पुरूष लोग ही लेते हैं। उनके स्वास्थ्य पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। बीमारी न हो, उसे आराम मिले, बीमारी हो तो इलाज हो, गर्भवती होने पर और माँ बनने पर कोई सही देखभाल नहीं की जाती, उसके नाम पर कोई मकान, दुकान, जायदाद, गाड़ी, बैंकखाता आज भी न के बराबर है। अगर किसी सरकारी फायदे की योजना के कारण उनके नाम से कुछ है भी तो उसका असली मालिक पति, पिता या बेटा या कोई भी आदमी रिश्तेदार रहता है। निर्णय लेने में तो उसको कोई पूछता ही नहीं। यहाँ तक कि पंच, सरपंच महिलाएं भी ज्यादातर केवल नाम के लिए, आरक्षण के कारण पद पर होती है। इस पद का भी सारा लाभ ज्यादातर आदमी लेते है। अभी तो यह हालत हो गई है लड़कियों के जन्म, उसे पढ़ाना, शादी, या उनको साईकल देने की बात हो यह सब सरकार का काम हो गया है क्योंकि माँ–बाप और समाज तो बेटे को साईकल, मोटर साईकल लेकर देते है, उसे स्कूल, कालेज भी भेजते है, शहर में कमरा किराए पर लेकर पढ़ाते है लेकिन बेटी के लिए उनकी हालत इतनी खराब है कि उसके लिए वो गरीब हैं, उन पर दया करके कोई कुछ देगा तो बेटी को मिलेगा। ऐसे लोग अपनी इज्जत, शान, कर्तव्य या अधिकार की कोई चिन्ता नहीं करते बस पैसा मिलना चाहिए।

समय आ गया है कि समाज संभल जाए और समझ जाए। यदि हम चाहते हैं कि इस दुनिया में अच्छे, स्वस्थ, पढ़े लिखे, समझदार, बेटे चाहिए तो ऐसा जीवन चाहिए कि किसी तरह का नशा न हो, खून खराबा न हो, दारू बंद हो जाए, मारपीट न हो, लूटपाट न हो, धोखाधड़ी न हो, भ्रष्टाचार न हो। हर माँ, बहन इज्जत, शांति और आराम से जी सकें। ऐसे पति हो जो पत्नी को बराबर का इंसान समझे, उसकी इज्जत करें, उससे प्रेम करें, उसको पूरा सहयोग दें, ऐसे जिम्मेदार व समझदार बाप हो जो बेटी–बेटे को बराबरी से पाले, बराबरी से अधिकार दे, और ऐसे दामाद हों जो अपने माता–पिता और सास–ससुर को बराबर प्रेम, इज्जत दे और उनकी देखभाल करें, देश के ऐसे नागरिक बने जिन पर देश ही नहीं पूरी दुनिया गर्व कर सकें। यह सारे फायदे लेने के लिए महिलाओं और लड़कियों पर पूँजी लगाना पड़ेगी। यहाँ पूँजी का मतलब केवल पैसा नहीं है, हमें अपना समाज बदलना होगा, अपनी सोच बदलनी होगी, अपना स्वभाव बदलना होगा, अपना व्यवहार बदलना होगा, तो ही आगे चलकर फायदा होगा। पूँजी लगाने का मतलब है, उनको अच्छी शिक्षा देना, उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखना, वह क्या चाहती है वो जानना होगा और उन्हें आगे बढ़ाना होगा।

लड़कियों को पढ़ाओ और दुनिया आगे बढ़ाओ

हम सभी ने कभी न कभी जरूर सुना होगा कि एक लड़के को पढ़ाओगे तो एक इंसान को पढ़ाओगे और एक लड़की को पढ़ाओगे तो एक परिवार को पढ़ाओगे और उसका फायदा पूरे समाज को मिलेगा। इसलिए लड़कियों को शिक्षित करना बहुत जरूरी है क्योंकि लड़की आगे चलकर माँ बनती है। माँ जिस तरह की शिक्षा बच्चों को देती है बच्चे वैसे ही बनते हैं। अगर माँ पढ़ी–लिखी होती है तो वह अपने बच्चों को पढ़ाती है और बच्चों को समझदार बनाकर सही रास्ते पर चलाती है। अगर माँ धर्म में विश्वास रखती है तो वह बच्चों को भी ईश्वर से प्रेम करना सिखाती है, अगर माँ चरित्र बनाने पर ध्यान देती है तो उनके अंदर ऐसे गुण पैदा करती है कि वह ईमानदार नागरिक बन सके।

बहाई पवित्र लेखों में महिलाओं को शिक्षित करने के बारे में लिखा गया है, ''माता–पिता को हर तरह से लड़कियों के प्रशिक्षण में संलग्न हो जाना चाहिए, उन्हें ज्ञान की शिक्षा देना, सद्व्यवहार, सही जीवनयापन, सुन्दर चरित्र निर्माण, शुद्धता, एकनिष्ठा, अर्ध व्यवसाय, दृढ़ता, घर की व्यवस्था, बच्चों की शिक्षा और लड़कियों को आवश्यकतानुसार जो भी जरूरी हो, वह सब कुछ महिला को देना है।''

आमतौर पर देखा गया है कि ऐसी महिलाएं जो पढ़ी–लिखी थी उनके बच्चों की मरने की संख्या में कमी आई है। पढ़ी लिखी लड़कियां 18 साल के बाद शादी करती हैं। कम बच्चे पैदा करती हैं, दो बच्चों में अंतर रखती है व पालन पोषण सही तरीके से करती हैं। उनके बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है, वे पढ़ाई में तेज होते हैं। यह बच्चे पढ़े–लिखे पिता व निरक्षर माता के बच्चों से ज्यादा अच्छा काम करते हैं। उदाहरण के लिए केरल राज्य के बच्चे ज्यादा स्वस्थ्य होते हैं क्योंकि वहां की महिलाएं पढ़ी–लिखी हैं। महिलाएं अपने कमाई का ज्यादातर हिस्सा परिवार पर खर्च करती हैं। इस तरह से पढ़ी लिखी महिलाएं हर क्षेत्र में योगदान देती है। और ज्यादा सीखने के लिए तैयार रहती है। निरक्षर महिलाएं भी पढ़ी–लिखी महिला से सीखकर आगे बढ़ने की कोशिश करती हैं। इसलिए कहा गया है कि लड़की को पढ़ाकर ही हम समाज को आगे बढ़ा सकते हैं।

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान के महिलाओं और लड़कियों के निवेश के अनुभव :

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, इन्दौर की स्थापना 1985 में हुई। 'बरली' शब्द का मतलब है घर के ठीक बीच का वह आधार स्तम्भ (लकड़ी का खम्भा) जिस पर पूरा घर टिका रहता है। संस्थान ऐसा मानता है कि महिलाएं ही समाज की 'बरली' है जिन पर पूरा समाज टिका हुआ है। अगर महिला मजबूत है तो सारा परिवार, समाज, देश, दुनिया मजबूत है।

संस्थान का मुख्य उद्देश्य है ग्रामीण और आदिवासी युवा महिलाओं को प्रशिक्षित कर उनकी क्षमताओं और योग्यताओं को उजागर करना, जिससे वे अपना, अपने परिवार, अपने गाँव, अपने समुदाय और अपने देश का विकास कर सकें। संस्थान पिछले 23 सालों प्रशिक्षण देने में तन, मन, धन एवं पूरी मेहनत से लगाकर कोशिश कर रहा है। यह प्रशिक्षण निःशुल्क है। हर साल प्रशिक्षणार्थी छः महीने एवं एक साल तक संस्थान में रहती है। संस्थान में रहना, प्रशिक्षण, तीन समय का खाना, बीमार होने पर दवा, लिखने के लिए कापियां, पेन, सिलाई सीखने के लिए कपड़ा, धागा, ड्राफ्ट बनाने के लिए पेपर, कैंची, सुई, सिलाई मशीन आदि दिया जाता है। इस प्रशिक्षण कार्यकम को चलाने के लिए संस्थान में 29 लोग काम करते हैं। छः माह के लिए 25000 रूपये और एक साल वाले प्रशिक्षर्णी पर 50000 रूपये एक प्रशिक्षणार्थी पर खर्च होता है।

यह प्रशिक्षण दो प्रकार के हैं। 1. आवासीय प्रशिक्षण 2. गैर आवासीय प्रशिक्षण। आवासीय प्रशिक्षण इन्दौर में दिए जाते हैं। गैर आवासीय प्रशिक्षण छत्तीसगढ़ के जिला कांकेर में दिए जाते है। संस्थान ने अपनी पुस्तकें लिखी हैं जो प्रशिक्षणार्थियों को बहुत ही कम कीमत पर दी जाती हैं।

शिक्षा में निवेश के उदाहरण

जब प्रशिक्षणार्थी संस्थान में आते है तो ज्यादातर ऐसी महिलाएं और लड़कियां होती है जो पढ़ना लिखना नहीं जानती, थोड़ा बहुत पढ़ लिख लेती हैं या कुछ ही ऐसी होती है जिन्होंने पढ़ाई बीच में छोड़ दी है। प्रशिक्षण की शुरूआत में पढ़ना लिखना सिखाया जाता है। जब वे घर लौटती है तो हाट–बाजार में जाकर अपना सामान खरीद लाती हैं। उसका हिसाब किताब कर लेती है। पत्र लिखकर संस्थान से संपर्क बनाए रखती हैं। इसके साथ ही कई प्रशिक्षणार्थी ऐसी है जो प्रशिक्षण के बाद आगे की पढ़ाई जारी रखती है।

इसका एक उदाहरण है धार जिले के गाँव भगांवा की रहने वाली कु. अन्तरी बघेल जिसने संस्थान में जून–सितम्बर 1997 में तीन महीने का सामुदायिक स्वयंसेविका का प्रशिक्षण लिया। उस समय वह 10 वीं कक्षा में तीन बार फेल हो चुकी थी इसलिए सोचती थी कि वह अब पढ़ नहीं पाएगी। उसने संस्थान में

कु. अन्तरी बघेल

प्रशिक्षण यह सोचकर लिया कि वह कटाई–सिलाई सीखकर सिलाई का काम कर अपने पैरों पर खड़ी हो सकेगी। प्रशिक्षण ने उसके अंदर एक नई ताकत और नए विचार दिए। उसके मन में आगे बढ़ने की लगन लग गई। उसने फिर से 10 वीं का परीक्षा फार्म भरा, परीक्षा दी और पास हो गई। उसके बाद कुक्षी में कमरा लेकर 11वीं कक्षा की पढ़ाई शुरू की। वह हर साल पास होती गई। इस तरह उसने 12वीं, बी. ए., एम. ए. हिन्दी साहित्य, और बी. एड. तक की पढ़ाई की है। अब वह इंदौर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में एम. फिल. हिन्दी साहित्य पढ़ रही है। अपनी जैसी दूसरी बहनों के लिए संदेश देती है कि वे पढ़ाई जारी रखे और अपने जीवन के विकास के रास्ते को खोल दे। बहाई लेखों के अनुसार, ''शिक्षा सभी तरह की शक्ति के खजानें की चाबी है। चाहे हमें इस दुनिया में पेट भरने के गुण सीखना है या प्रशासन करना है, मामला चाहे समाज को बदलने का हो या अर्थव्यवस्था का, लोगों को मानसिक रूप से बदलना हो या उन्हे नैतिक शिक्षा देकर अच्छा समाज बनाना हो लोगों को शिक्षित किया जाना जरूरी हैं।''

स्वास्थ्य शिक्षा में निवेश के उदाहरण

प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण में स्वास्थ्य की शिक्षा लेती हैं। जिससे उनमें जागरूकता आती है और इस शिक्षा का उपयोग वे अपने लिए और गाँव के लिए करती हैं।

खरगोन जिले की कु. अमिता मोरे, कु धुरकी नार्वे, कु रीना सोलंकी, सुश्री कमला चौहान ने छह माह का सामुदायिक स्वयं सेविका का प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के बाद अब वे सभी अपने–अपने गाँवों में आँगनवाड़ी कार्यकर्ता का काम

आंगनवाड़ी में बच्चों को सिखाती सुश्री कमला चौहान

कर रही है। जन्म से 6 वर्ष के बच्चों की देखभाल खान–पान, समय–समय पर बच्चों का वजन लेती है बच्चे के विकास पर नजर रखती है। उनके पास दस्त, बुखार, खाँसी, जुकाम, कटना, जलना, फोड़े, कृमि आदि की दवाइयाँ रहती है। उसकी जानकारी घर–घर जाकर देती है। माँ और बच्चों के स्वास्थ्य के बारे में जानने के लिए घर–घर जाकर जानकारी लेती है। आँगनवाड़ी में संस्थान की लिखी ''आओ स्वास्थ्य पढ़ाना सीखें'' पुस्तक का उपयोग भी करती है।

इसी तरह से सुश्री सारिका मुकेश व श्रीमती सारिका डावर, श्रीमती बिन्दली डोडवा 'आशा कार्यकर्ता' का काम करती है। यह कार्यकर्ता महिला व बच्चे के स्वास्थ्य को लेकर काम करते है। सारिका को बड़वानी जिले से राष्ट्रीय क्षय नियंत्रण कार्यक्रम का प्रशंसा पत्र मिला है। वह टी. बी. के रोगियों को पूरा इलाज करने की जानकारी देती है।

अपने समुदाय के विकास में निवेश के उदाहरण

किसी भी इंसान को आगे बढ़ने में सोच, आदतें व विचार बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। इसी को ध्यान में रखकर 'मेरा अपना और अपने समुदाय का विकास' का प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे प्रशिक्षणार्थी स्वयं तो सशक्त होती हैं और अपनी शक्ति का

कु. सत्या कुंजाम | कु. लता यादव | सोनवती नेताम

उपयोग एक अच्छे समाज व देश को बनाने में करती हैं। एक उदाहरण है, कु. लता यादव ग्राम बेवरती, जिला कांकेर (छत्तीसगढ़)। लता ने 6 माह का सामुदायिक स्वयं सेविका का प्रशिक्षण लिया। उसके बाद 1 साल का सामुदायिक प्रशिक्षिका का प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के साथ–साथ 10 वीं कक्षा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान से पास की। कम्प्यूटर का सामान्य ज्ञान लिया व संस्थान की पत्रिका को लिखने में सहयोगी का काम किया। संस्थान में जून 2002 से अप्रैल 2006 तक प्रशिक्षिका का काम किया। उसके बाद मई 2006 से बरली ग्रामीण विस्तार केन्द्र की प्रभारी के पद पर काम कर रही है। उसके साथ संस्थान से ही प्रशिक्षित कु. सत्या कुंजाम और कु. सोनवती नेताम प्रशिक्षिका के पद पर काम करते है। यह उनकी टीम है। तीनों मिलकर अपने गाँव व आसपास के गाँवों में तीन माह का सामुदायिक स्वयंसेविका का प्रशिक्षण देती है। यह प्रशिक्षण गैर आवासीय है। आसपास की लड़कियां व महिलाएं पढ़ने के लिए इन केन्द्रों में आती है और प्रशिक्षण के बाद घर चली जाती है। यह विस्तार केन्द्र उन महिलाओं के लिए हैं जो घर छोड़कर संस्थान आकर प्रशिक्षण नहीं ले पाती हैं। इसके साथ ही विस्तार केन्द्र की प्रशिक्षिकाएं

समुदाय में नीचे दी गतिविधियां चलाती है।

- आंगनवाड़ियों में गर्भवती व दूध पिलाने वाली माताओं को ''आओ स्वास्थ्य पढ़ना सीखें और सिखाएं'' पुस्तक से पढ़कर सिखाती हैं।
- प्राथमिक स्कूल में पहली से पाँचवी कक्षा के बच्चों के लिए नैतिक शिक्षा देती हैं। कक्षाओं में बच्चे सद्गुण, अधिकार, साफ–सफाई के बारे सीखते है। प्रार्थना गीत व कहानियां सिखाई जाती है।
- माध्यमिक स्कूल और हाईस्कूल में छठी से नौवीं कक्षा के किशोरों के लिए 'मेरा अपना और अपने समुदाय का विकास' और स्वास्थ्य शिक्षा देती हैं। इन कक्षाओं में बच्चों के अधिकार, साफ–सफाई का महत्व, शुद्ध पानी, लिंग समानता, सद्गुण, नैतिक नेतृत्व, सदाचार व स्वयं के विकास के बारे में पढ़ते हैं।
- किशोर सशक्तिकरण कार्यक्रम खास 12 से 15 साल के किशोरों के लिए बनाया गया है। यह उम्र लड़के–लड़कियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती है। मार्गदर्शन न मिलने के कारण भटक गये तो वे कभी भी सही राह पर वापिस नहीं आ पाएंगे। इसलिए किशोरों के जीवन में आनेवाली कठिनाईयां और इनका सामना करते हुए सही राह पर चलने के बारे में बताती हैं।

ऊपर लिखी सभी गतिविधियों में एच. आय. वी./एड्स की जानकारी दी जाती है। हमारे पास एड्स की सही जानकारी होगी तो हम अपने आपको और कई लोगों को इससे बचा सकते हैं। केवल बच्चों की कक्षाओं में इस विषय की जानकारी नहीं दी जाती है।

क्टाई–सिलाई प्रशिक्षण में निवेश के उदाहरण

कटाई–सिलाई का प्रशिक्षण लेकर ग्रामीण और आदिवासी महिलाएं घर बैठे रूपया कमाती हैं और अपने पैरों पर खड़े हो जाती हैं। संस्थान में अभी तक जिन महिलाओं ने प्रशिक्षण लिया है उनमें से ज्यादातर महिलाएं कटाई–सिलाई का काम कर रही हैं। इसका उदाहरण है खरगोन जिले की श्रीमती मंटू सोलंकी ने संस्थान से छह माह का सामुदायिक स्वयंसेविका का प्रशिक्षण लिया है। वह कभी स्कूल नहीं गई थी। घर की बड़ी बेटी होने के कारण घर का सारा काम करना पड़ता था। सोलह साल में ही उसकी शादी कर दी गई। उसका आठ साल का एक बच्चा है। मंटू को संस्थान के बारे में पूर्व प्रशिक्षणार्थी कु. रेखा मोरे से जानकारी मिली। जब वह संस्थान में आई तब उसने पाया कि प्रशिक्षण में कटाई–सिलाई, कढ़ाई, साक्षरता, स्वास्थ्य शिक्षा, मेरा अपना विकास, पर्यावरण, सौर ऊर्जा का उपयोग, ब्लाक व बाटिक प्रिटिंग आदि विषयों के बारे जानकारी मिली। प्रशिक्षण के बाद वह अपने घर पर ही सिलाई करके रोज के 100 रूपए कमाती है। वह संस्थान के बारे में लोगों को जानकारी देती है। उसमें आए परिवर्तन को देखकर गाँव के लोग अपनी बेटियों को भी प्रशिक्षण लेने भेजते हं वह उनकी बेटियों को लेकर संस्थान में आकर आवेदन फार्म के नियम और शर्तों को समझाकर भर्ती करवाती है। माता–पिता को भी बैठक में उन्हें अपनी बेटियों से मिलने के लिए लेकर आती है। संस्थान से प्रशिक्षित उस क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों के बारे में जानकारी लेने के लिए उसे संस्थान ने मूल्यांकन फार्म भरने का काम दिया है जो वह कर रही है। उसे संस्थान के साथ जुड़कर जितनी भी सेवा दे सकती है वह जरूर देगी। वह अपने विकास के लिए जागरूक है और अपने बेटे को एक अच्छा इंसान बनाने चाहती है।

इसी तरह से संस्थान से प्रशिक्षित बहनें गाँव के आसपास लगने वाले बाजार जैसे जिला झाबुआ के उमराली, वालपुर, सिलौटा, नानपुर, अलीराजपुर व बड़ी हथवी में कुल 38 दुकाने हैं जिनमें कटाई–सिलाई, जनरल स्टोर्स व टेलीफोन बूथ शामिल है। खरगोन जिले के कोठा, मेढ़ागढ़, धूपी, मूंडिया, दामखेड़ा, हेलापड़ावा, चिरिया, चोपाली, खारियामाल, बादलिया आदि गाँवो की 35 बहनों से भेंट की उनमें से 31 बहनें अपने घर पर और आसपास के बाजार में सिलाई का काम करती है।

संस्थान के समाचार

अंर्तराष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम

संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर 6–9 मार्च 2008 तक चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला के शुभारंभ में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. एस. पी. सिंह, विभागाध्यक्ष, पर्यावरण अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर ने कहा कि बरली संस्थान प्रशिक्षण के माध्यम से ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए अत्यंत प्रशंसनीय काम कर रहा है।

अर्थशास्त्री डॉ. (श्रीमती) शिरीन महालाती ने कहा कि समाज के संपूर्ण विकास के लिए महिलाओं एवं लड़कियों के विकास में निवेश करना बहुत जरूरी है। जब महिला–पुरूष दोनों साथ मिलकर काम करेंगे तभी समाज विकास कर पाएगा।

वैज्ञानिक डॉ. (श्रीमती) गीता हांडा ने कहा कि एक शिक्षित और जागरूक महिला ही अपने परिवार और समुदाय के विकास में सही योगदान दे सकती है।

संस्थान की निदेशिका डॉ (श्रीमती) जनक मगिलिगन ने सभी मेहमानों का स्वागत किया व संस्थान का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि निवेश करने का मतलब पैसा, समय व ऊर्जा लगाना होता है। लोग भवन और सड़क बनाने में निवेश करने की बात करते हैं और लाखों करोड़ो रूपए खर्च करते है लेकिन इससे समाज का विकास नही हो पाता है। मध्यप्रदेश में विशेष तौर से बच्चों और महिलाओं के स्वास्थ्य में निवेश करने की आवश्यकता है क्योंकि यहां पर 0 से 3 वर्ष के 60 प्रतिशत बच्चे कुपोषित हैं और माताओं के मरने की संख्या में मध्यप्रदेश का तीसरा स्थान है। उन्होंने आगे कहा कि जब तक महिला और लड़की के शिक्षा और स्वास्थ्य पर निवेश नही किया जाएगा तब तक वे समाज के विकास में भागीदार नही बन सकती है।

आस्ट्रेलिया से आई नर्स शबनम फानी ने कहा कि महिलाओं को आगे बढ़ाने में पुरूषों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

प्रशिक्षणार्थियों में से बड़वानी की श्रीमती वेस्तीबाई ने बताया कि उनके पति और बच्चों ने उन्हें प्रशिक्षण लेने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि वे साक्षर और जागरूक हो सकें।

देवास जिले की कु. कृष्णा ने कहा कि जीवन में पहली बार महिला दिवस के बारे सुना है और कार्यशाला में भाग ले रही हूँ। मनीषा, अनिता और साथी बहनों ने भिलाली और मालवी

में महिलाओं के अधिकारों व उनकी जागरूकता से जुड़े गीत गाए। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती ढेडी बागदरे व आभार प्रदर्शन कार्यक्रम अधिकारी सुश्री विजयश्री ने किया।

''आओ कटाई सिलाई सीखें और सिखाएं'' पुस्तक का लोकार्पण

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला का समापन 9 मार्च 2008 को किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के अध्यक्ष श्री एम. सी. पंत थे। उन्होंने बरली संस्थान द्वारा लिखित ''आओ कटाई सिलाई सीखें और सिखाएं'' पुस्तक का लोकार्पण किया। यह पुस्तक नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के कटिंग व टेलरिंग पाठ्यक्रम पर आधारित है। श्री पंत ने कहा कि पुस्तक की भाषा बहुत ही सरल है। इसमें चित्रों द्वारा समझाने का तरीका बहुत अच्छा है। उन्होंने कहा कि वे इस पुस्तक का प्रचार प्रसार करेंगे। भविष्य में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के अन्य पाठ्यक्रमों को बनाने में बरली संस्थान का सहयोग लेंगे।

श्री शिरीश चंद्रा, महाप्रबंधक, मेकमिलन प्रकाशन, दिल्ली ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होने कहा कि ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के लिए बनाई गई पुस्तक ''आओ कटाई

सिलाई सीखें और सिखाएं'' के प्रकाशन में उन्होंने अपना योगदान दिया है और आगे भी वे पुस्तकों के प्रकाशन में सहयोग करेंगे।

संस्थान की निदेशिका डॉ. (श्रीमती) जनक मगिलिगन ने अतिथियों का स्वागत किया और संस्थान का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि कटाई सिलाई की 'पुस्तक 23 सालों के सतत् प्रयोग, अनुभव और शोध के बाद तैयार की गई है। प्रशिक्षिकाओं ने प्रशिक्षण के दौरान नए–नए प्रयोग कर पुस्तक को लिखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

कार्यक्रम अधिकारी सुश्री विजयश्री ने बताया कि निरक्षर प्रशिक्षणार्थी तीन महीने में साक्षरता पाठ्यक्रम पूर्ण करते है। उसके बाद वे नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग द्वारा आयोजित कटाई सिलाई की परीक्षा की तैयारी करते है और परीक्षा देते है।

कार्यशाला में प्रशिक्षणार्थियों ने महिला सशक्तिकरण, स्त्री–पुरूष समानता, बाल विवाह, महिलाएं और कानून, महिलाओं एवं लड़कियों में निवेश तथा डॉ. चंद्रसेन गंधे, स्त्री रोग विशेषज्ञ, परिवार नियोजन सभा इन्दौर के कार्यक्रम अधिकारी श्री राजेन्द्र व्यास ने महिलाओं के लिए स्वास्थ्य शिक्षा का महत्व, परिवार नियोजन का महत्व व भ्रूण हत्या विषय पर चर्चा की।

छत्तीसगढ़ विस्तार केन्द्रों में अंर्तराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 6 व 7 मार्च को दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई व 8 मार्च को भण्डारीपारा में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस

अवसर पर पेराडाइज स्कूल की प्राचार्या श्रीमती रश्मी रजक ने कहा, महिलाएं पुरूषों के बराबर है। उनमें हर काम को करने की क्षमता है। बस जरूरत है तो पहल करने और आत्मविश्वास को बढ़ाने की।

बरली विस्तार केन्द्र समिति के अध्यक्ष श्री धुलजी रावल ने कहा कि ईश्वर की नजर में महिला व पुरूष समान हैं, समान रहेंगे और दोनों की समानता में ही दुनिया का विकास है।

विस्तार केन्द्र की प्रभारी कु. लता यादव ने कहा कि महिलाओं के अंदर आत्मविश्वास, साहस और निडरता होगी तो वह कभी भी शोषण का शिकार नहीं बनेगी।

प्रशिक्षिका कु. सत्या ने कहा कि, ''दुनिया की आधी आबादी महिलाओं की है। जब तक महिला और पुरूष दोनों में समानता नहीं होगी तो दुनिया का विकास सम्भव नहीं है।

पूर्व प्रशिक्षणार्थी कु. ललिता पटेल ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि मैंने इस केन्द्र से प्रशिक्षण लेकर घर पर ही सिलाई कर रही हूँ। महिला दिवस पर यही संदेश देना चाहती हूँ कि महिलाओं को घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर ज्ञान के स्तर को बढ़ाना चाहिए।'' कार्यक्रम का संचालन कु. सोनवती नेताम एवं आभार सहायक प्रशिक्षिका कु. सरिता ने किया।

निदेशिका का सम्मान

- 8 मार्च 2008 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर भोपाल के जवाहर बालभवन परिसर में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा सम्मान समारोह आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने एवं मुख्य अतिथि भाजपा सांसद श्रीमती सुषमा स्वराज थी। कार्यक्रम में संस्थान की निदेशिका डॉ (श्रीमती) जनक मगिलिगन को राजमाता विजयाराजे सिंधिया समाजसेवा पुरस्कार 2007 के लिए सम्मानित किया गया। उन्हें यह पुरस्कार 1985 से अब तक आदिवासी और ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण और विकास के लिए किए गए कामों के लिए दिया गया। पुरस्कार में एक लाख रूपए की राशि का चेक, प्रशस्ति पत्र, स्मृति–चिन्ह, शॉल व श्री फल दिए गए। जो कि उन्होंने यह एक लाख रूपया ग्रामीण आदिवासी महिलाओं के विकास हेतु बरली संस्थान को भेंट कर दिया। राजमाता पुरस्कार प्राप्त करने के बाद निदेशिका ने कहा कि इस सम्मान से उनकी जिम्मेदारियां और भी बढ़ गई हैं।

डॉ. (श्रीमती) जनक मगिलिगन को सम्मानित करते हुए म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान साथ में भाजपा सांसद श्रीमती सुषमा स्वराज

- 31 मार्च 2008 को नेताजी सुभाषचंद्र बोस मंच द्वारा श्री केशवराव कामले की पुण्यतिथि पर अप्सरा होटल में संस्थान की निदेशिका को समाज सेवा में योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी
सुश्री अर्चना मारगोनवार, श्री राकेश गुप्ता व श्री जिम्मी मगिलिगन

प्रिंटेड मैटर–बुक पोस्ट

पता

_____

_____

_____

_____

विशेष सूचना

प्रशिक्षण लेकर आप स्वयं के लिए, अपने परिवार और अपने गाँव के लिए जो भी काम कर रहे हों, हमें जरूर लिखकर भेजें ताकि आपके समाचार ''बरली की दुनिया'' में छाप सकें।

संपादक ''बरली की दुनिया''
बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान
180, भमोरी, न्यू देवास रोड़,
इंदौर–452010 (म.प्र.) फोन : 0731–2554066

रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179 बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित **मुद्रण स्थल** : राजा ऑफसेट, 863/9,नेहरूनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन